UGC Care Listed
त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504 Nagfani
RNI No. UTTHIN/2010/34408
वर्ष-12, अंक-43, अक्टूबर - दिसम्बर 2022

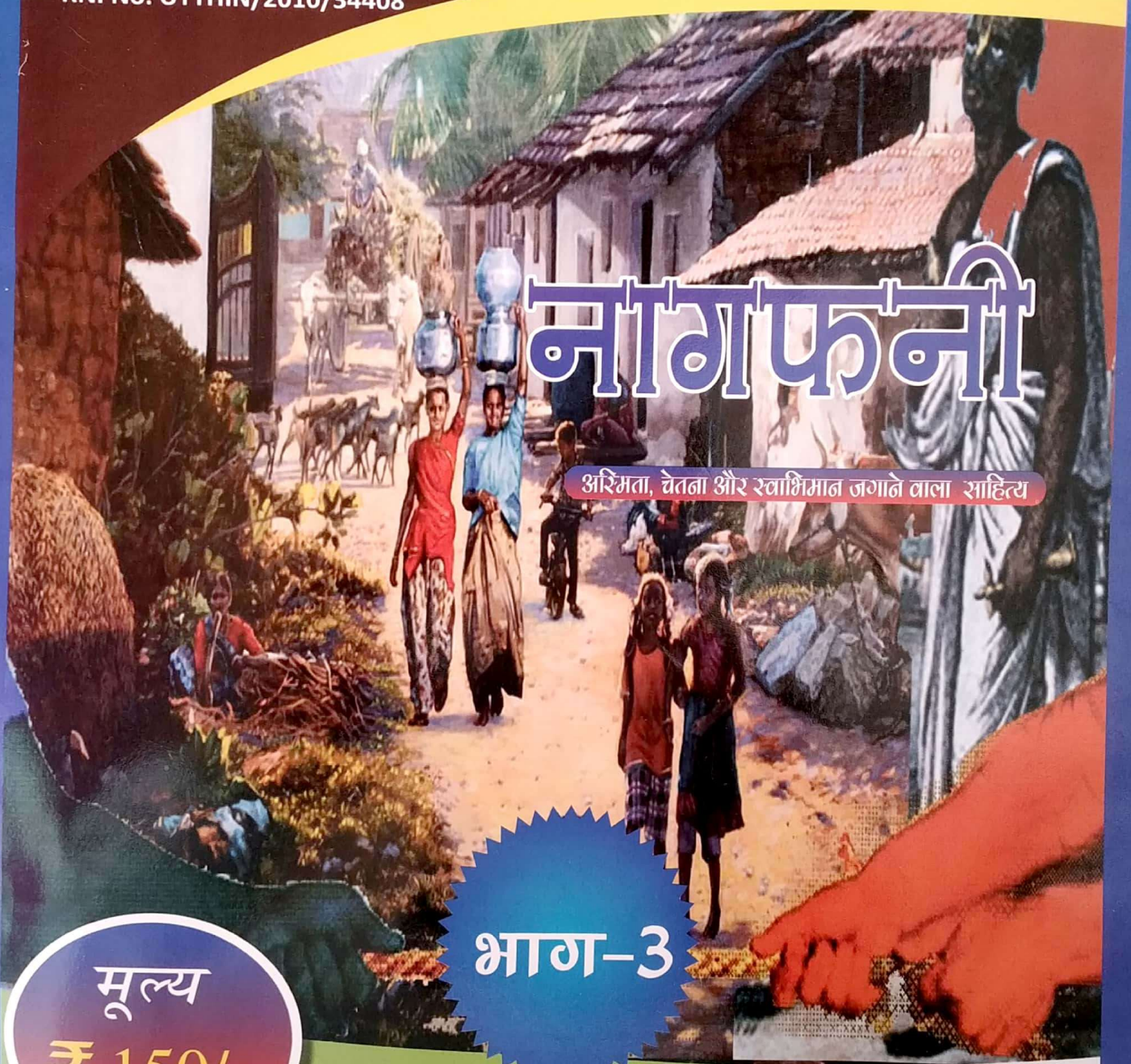

नागफनी

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

भाग-3

मूल्य
₹ 150/-

Scanned with CamScanner

भाग – 03

नागफनी

A Peer Reviewed Refereed Journal
(अस्मिता चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)
त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504NagfaniRNI No.UTTHIN/2010/34408

वर्ष-12 अंक 43,अक्तूबर -दिसम्बर-2022 भाग-3

संपादक
सपना सोनकर

सह संपादक
रूपनारायण सोनकर

Co Editor(English
Prof.Rajesh karankal
Dr.Santosh Kumar Sonkar

कार्यकारी संपादक
डॉ.एन.पी.प्रजापति
प्रोफेसर बलिराम धापसे

सलाहकार मण्डल (Peer Review Comittee)

प्रोफेसर विष्णु सरवदे, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर आर. जयचंद्रन तिरुअनंतपुरम (केरल)
प्रोफेसर दिनेश कुशवाह,रीवा (मध्य प्रदेश)
डॉ.एन. एस. परमार, बड़ौदा (गुजरात)
प्रो. दिलीप कुमार मेहरा, बी.बी.नगर (गुजरात)
डॉ.उमाकांत हजारिका, शिवसागर(असम)
डॉ. आर. कनागसेल्वम, इरोड (तमिलनाडु)
प्रोफेसर संजय एल. मादार,धारवाड़ (कर्नाटक)
प्रोफेसर गोविन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ.दादा साहेब सोलुनके, महाराष्ट्र (औरंगाबाद)
प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर मोहनलाल 'आर्य' मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)
डॉ.जी.व्ही .रत्नाकर हैदराबाद(तेलंगाना)

प्रकाशन/मुद्रण

प्रकाशक रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ.एन.पी.प्रजापति एवं प्रोफेसर बलिराम धापसे द्वारा नमन प्रकाशन–423/Aअंसार। रोड दरियागंज, नई दिल्ली 11002 में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य।

मुख पृष्ठ– उत्कर्ष प्रजापति, सिंगरौली - मध्यप्रदेश

संपादकीय/व्यवस्थापकीय कार्यालय

दून व्यू कॉटेज स्प्रिंग रोड, मंसूरी -248179, उत्तराखण्ड, दूरभाष : 0135-6457809 मो.0941077718

शाखा कार्यालय

पी.डब्ल्यू. डी. आर. -62 ए ब्लॉक कॉलोनी बैढ़न, जिला-सिंगरौली म. प्र. पिन-486886 मो. 09752998467

सहयोग राशि -150/-रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क (संस्था के लिए)-1500/-रुपये, पंच वार्षिक सदस्यता शुल्क (व्यक्ति के लिए)-3000/-रुपये पंच वार्षिक संस्था और पुस्तकालयों के लिए –3500/-रुपये, विदेशों में$50 आजीवन व्यक्ति-6000/-रुपये,संस्था-10,000/-रुपये।

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि-Dalit Utkarsh Samiti–A/C–31590110006504
IFSC Code-UCBA0003159 Branch-Waidhan ward no 40

नोट:-पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति आवश्यक है। संपादक-संचालक पूर्णतया अवैतनिक एवं अध्यवसायी हैं।**'नागफनी'**में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वयं के हैं। जिनमेंसंपादक की सहमति अनिवार्य नहीं हैं।**'नागफनी'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादन न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनीऑर्डर, बैंक/चेक/बैंक ट्रांसफर/ई-पेमेंट आदि से किए जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चेक में बैंक कमीशन 50/-अतिरिक्त जोड़ें दें।

लेख भेजने के लिए –Mail-ID- nagfani81@gmail.com
पत्रिका के बारे मे विस्तार से जानने के लिए देखें Website:–http:naagfani.com

Scanned with CamScanner

संपादकीय 06

साहित्यिक विमर्श

1.ज्ञानेश्वर की भक्ति धारा-**प्रो.डॉ.गुरुदत्त जी राजपूत** 7-8
2.हिंदी के विकास में जनपदीय बोलियों का योगदान -**डॉ.राम बिनोद रे** 8-10
3.वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में बदलते मानवीय मूल्य: आधुनिक कविताओं के संदर्भ में-**डॉ.जितेंद्र पी.पाटिल** 11-12
4.स्वयं प्रकाशक की कहानियों में 'मानव मूल्य'-**डॉ.शेळके बी.टी.** 12-13
5.'कविता के माध्यम से आम आदमी से संबंध स्थापित करता कवि सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'-**डॉ.सुशीला** 14-15
6.रूपनारायण सोनकर की रचनाओं में सामाजिक बदलाव तथा टकराहट की अनुगूँजें-**डॉ.हरे राम सिंह** 16-17
7.गाँधीवाद और 'दी अनटचेबल' उपन्यास-**संत कीनाराम त्रिपाठी** 18-19
8.नरेंद्र मोहन के काव्य में शिल्प वैभव-**डॉ.शबाना हबीब** 20-21
9.'कसप' उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन: एक दृष्टि-**डॉ,अखिलेन्द्र प्रताप सिंह** 21-22
10.प्रौद्योगिक संस्कृति में बदलते मूल्यबोध: 'दौड' के संदर्भ में-**डॉ.जस्टी इम्मानुएल** 23-24
11.'आषाढ़ का एक दिन' की नाट्य भाषा-**डॉ.सुषमा कुमारी** 24-25
12.आचार्य रामचन्द्र शुक्ल:एक विशिष्ट व्यक्तित्व-**डॉ.गगन कुमारी हळवार** 25-26
13.हिंदी कथा साहित्य में गीतांजलि श्री का योगदान- **कल्पना एन.&डॉ.बलविंदर कौर** 27-28
14.मोहन राकेश की कहानियों में जीवन मूल्य और मानवीय सम्बन्ध-**डॉ.हेमलता कांचनकर** 29
15.हिंदी कथा साहित्य में लघुकथाकारों का योगदान-**डॉ.मीना मिलिंद ठाकूर** 30-31
16.हरी शंकर परसाई के व्यंग्य में यथार्थ अभिव्यक्ति के विविध आयाम-**डॉ.एन.पी.प्रजापति** 32-34
17.जी-मेल एक्सप्रेस-एक नया आयाम-**डॉ.एस.प्रीति** 35-37
18.साहित्य में हास्य का स्वरूप-**डॉ.उर्विजा शर्मा** 37-39
19.वैश्विक संदर्भ में मथुरा बौद्ध मूर्तिकला:एक सांस्कृतिक धरोहर-**डॉ.नीरजा शर्मा** 39-40
20.कालजयी कवि कबीर-**डॉ.ए.एस.सुमेष** 40-41
21.अज्ञेय और उनका यात्रा-साहित्य-**डॉ.सिन्धु टी.आई** 42-43
22.प्रेमचंद साहित्य के अन्वेषी डॉ.कमलकिशोर गोयनका की शोध-साधना-**अनिल कुमार पाण्डेय** 43-45
23.विद्रोह की शालीन मुद्रा-समकालीन महिला कहानी का केरलीय परिवेश-**मधु वासुदेवन** 45-47
24.संत साहित्य की पूर्व पीठिका:सिद्ध साहित्य के विशेष सन्दर्भ में-**रीतिका पाण्डेय&डॉ.सत्य प्रकाश पॉल** 47-49
25.साहित्य और राज्यसत्ता:प्लेटो के विशेष संदर्भ में-**डॉ.आलोक कुमार सिंह** 50-51
26.नाटक का अनुवाद-**डॉ.श्रीराम हनुमंत वैद्य&प्रा.संजय गहिनी नाथ मोराले** 52-53
27.देवकीनन्दन खत्री के उपन्यास 'कुसुम कुमारी' में नैतिक मूल्य-**नवल पाल** 54-55
28.भगवानदास मोरवाल के उपन्यास 'बाबल तेरा देस में' भारतीय संस्कृति-**सुकेश कुमारी** 56-57
29.चित्रा मुद्गल के कहानी संग्रह 'पेंटिंग अकेली है' में चित्रित सामाजिक यथार्थ-**कुलदीप** 58-59
30.सच्चिदानंदन की कविताओं में परिस्थितिक चेतना-**अश्वती.एस** 60-61
31.'लॉकडाउन रोज़नामचा:मौत मिले, पर माटी में..' उपन्यास में श्रमिक जीवन के दुःखांत स्वर-**ओम प्रकाश** 62-64
32.सुशील कुमार सिंह के 'सिंहासन खाली है' नाटक में अभिव्यक्त राजनीतिक विसंगतियों पर व्यंग्य-**संदीप हंसराज शिंदे** 64-66
33.क्षेत्रीय लोकगीतों में वर्णित जीवन और प्रकृति चित्रण-**आशा शर्मा** 67-69
34.सामाजिक न्याय की इतिहास दृष्टि और हिंदी उपन्यास -**जितेंद्र कुमार यादव** 69-71
35.समकालीन कविताओं में पर्यावरण- **डॉ.मिनी ए. आर.** 72
36.वर्तमान परिप्रेक्ष्य में घटते नैतिक व सांस्कृतिक मूल्य,श्री रामचरितमानस के संदर्भ में-**श्रीमती संगीता समाधिया** 73-74
37.'महाजनी महात्म्य' उपन्यास में अभिव्यक्त किसान-जीवन-**राजेंद्र मीना** 74-75
38.रांगेय राघव के जीवन चरित्रात्मक उपन्यासों में कबीर, तुलसी और बिहारी-**डॉ.कनक लता रिद्धि** 76-77
39.शिवनारायण सिंह की बोधकथाओं में निहित जीवन संदेश-**सुशील कुमार तिवारी &डॉ.हरिणी रानी आगर** 78-79
40.प्रबोध कुमार गोबिल की कहानियों में युगीन सामाजिक चेतना-**सुश्री मदालसा मणि त्रिपाठी&डॉ.विश्वजीत कुमार मिश्र** 79-81
41.दक्खिनी हिंदी का नामकरण एवं प्रमुख साहित्यकार-**शिल्पा दत्त** 81-82
42.भारतीय समाज में व्यक्ति और उसके स्वाभिमान की वास्तविकता:उषा प्रियंवदा की वापसी कहानी के संदर्भ में-**नितुश्री दास** 83-84
43.जुवारीचीं पांयजणां:एक मूल्यांकन-**डॉ.श्रीनिवास वी. शेण्वि** 84-85
44.खिड़की कहानी संग्रह में संवेदना और अधिकार चेतना पक्ष-**डॉ.राजकुमारी** 86-87
45.'जीवन हमारा' आत्मकथा में अम्बेडकरवादी चेतना-**डॉ.मुदनर दत्ता सर्जेराव** 87-88

स्त्री विमर्श

1. इतिहास लेखन से गुमनाम दलित-आदिवासी वीरांगनाएं-**डॉ.भगवान गव्हाडे** 88-89
2. कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा:स्त्री अंतर्व्यथा की बेबाक दास्तान-**अनिमा बिश्वास** 92-93

Scanned with CamScanner

3.विचारधारा और नैतिकता की प्रयोगशाला में जैनेन्द्र के उपन्यासों के नारी पात्र-**डॉ.अजय कुमार** 94-95
4.समकालीन हिंदी लेखिकाओं की आत्मकथा में नारी जीवन-**अंजू पटेल&डॉ.एन.पी.प्रजापति** 96-97
5.एस.आर.हरनोट के उपन्यास 'नदी रंग जैसी लड़की' में सशक्त होती ग्रामीण नारी-**डॉ.राजन तनवर** 98-99
6.डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर:स्त्री मुक्तिदाता-**डॉ.जितेंद्र सावजी तागडे** 100-101

दलित विमर्श

1.दलित-क्रान्ति द्रष्टा कत्ति पद्माराव-**डॉ.वी.कृष्ण** 102-103
2.तेलुगु दलित कविता में दलित आक्रोश-**डॉ.विष्णु सरवदे** 104-105
3आंबेडकरवाद:दलितों के अस्मिताओं की वैचारिकी-**प्रा.डॉ.विश्वनाथ किशन भालेराव** 106-107
4.मानवीय मुक्ति का सौन्दर्यबोध पैदा करती हैं दलित कहानियां-**डॉ.प्रवीण कुमार&डॉ.कौशल कुमार** 108-113
5.प्रेमचंद, गांधी और आम्बेडकर का दलित चिंतन-**डॉ.रूपेश कुमार** 113-115
6.'डंक'उपन्यास वंचित वर्ग की फटेहाल जिंदगी से बाहर निकलने का रास्ता सुझाया है-**सुनील कुमार** 115-116
7.दलित अध्ययन का उदय,समाज में दलित वर्गों का उत्थान-**सुमलक अपुम&शिवम चतुर्वेदी** 117-118
8.मन्नू भण्डारी के 'महाभोज' में राजनीतिक व दलित विमर्श-**डॉ.दीपक कुमार** 118-119
9.प्रेमचंद जी के उपन्यासों में दलित चेतना-**डॉ.कृष्ण बिहारी रॉय** 119-120
10.डॉ.भीमराव अंबेडकर के चिंतन में जाति एवं जेंडर-**शरद जायसवाल&वीरेन्द्र प्रताप यादव** 121-123

आदिवासी विमर्श

1.बंजारा समाज और लोक साहित्य-**डॉ.कृष्णा डी लमाणि** 124-125
2.आदिवासी जीवन-दर्शन और गांधी-**डॉ.बन्ना राम मीना** 126-127
3.भतरा समुदाय के त्यौहार-**भारती लक्ष्मी पाल** 128
4.लोक और आदिवासी साहित्य-**अशर्फी लाल** 129-130
5.आदिवासियत की महागाथा 'बाघ और सुगना मुंडा की बेटी-**डॉ.अंजली एस.** 130-134
6.पत्थलगडी और आदिवासी संघर्ष-**डॉ.उषस पी.एस.** 134-136
7.पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास में झारखण्ड के आदिवासियों की भूमिका और उनकी वर्तमान स्थिति-**हिमांशु प्रभाकर** 136-138
8.पर्यावरण-बोध: 'ईश्वर और बाज़ार'-**मनीषा वी. के.&डॉ.सिंधु टी. आई.** 139-140
9.पीटर पॉल एक्का के उपन्यास 'सोन पहाड़ी' में अभिव्यक्त आदिवासी विस्थापन एवं पुनर्वास-**निम्मी सलोमी किन्डो** 141-142
10.बंजारा बोली:भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता-**प्रा.सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण** 142-143
11.महिला सशक्तिकरण में डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर का योगदान-**डॉ.मनिश कान्हा चव्हाण** 144-145
12.'मन्नेरवारलु' आदिवासी समुदाय की भाषा-**डॉ.गणशेटवार साईनाथ नागनाथ** 145-147

किन्नर विमर्श

1.उत्तर आधुनिकता की दृष्टि से किन्नर पुनर्वास की कथा 'तीसरी ताली'-**डॉ.सीमा चन्द्रन** 148-149
2.सामाजिक न्याय परम्परा और किन्नर जीवन-**डॉ.लक्ष्मीकान्त चंदेला** 150-151
3.यथार्थ किन्नर कौन?(बिन्दा महराज,किन्नर,गलती जो माफ़ नहीं,बीच के लोग,पन्ना बा,नेग,कहानियों के विशेष संदर्भ में)-**दीप्ति दास** 151-152

विविध विमर्श

1.भारतीय सामाजिक परिवेश में डॉ.अम्बेड्कर का आधुनिक चिंतन-**ड़ॉ.गोपाल लाल मीना** 153-155
2.अनुवाद का स्वरूप विश्लेषण-**डॉ.वंदना रानी** 155-157
3.'द गोखार्स डॉटर' के हिंदी अनुवाद में उद्धरित सांस्कृतिक प्रतीकों की समस्या-**डॉ.लखिमा देओरी** 157-159
4.मध्य गंगा घाटी की ताम्र पाषाणिक संस्कृति के विशिष्ट तत्व:एक नवीन अध्ययन-**नरेश कुमार** 160-161
5.समाचार-पत्रों में प्रकाशित कोरोना संबंधी शब्दावलियों का समीक्षात्मक अध्ययन-**इस्तेखार अहमद&डॉ.अख्तर आलम** 162-164
6. शांति शिक्षा में मानवाधिकार की भूमिका-**डॉ.कुलराज व्यास** 165-166
7. दुर्गम हिमालयी क्षेत्र में सामुदायिक रेडियो "कुमाऊं वाणी" का विकास व चुनौतियां-**राजेन्द्र सिंह क्वीरा** 167-169
8.वर्तमान विश्व में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता-**मोनिका राज** 169-171
9.अनुसूचित जनजाति के विकास में बाबासाहेब डॉ.अम्बेडकर का योगदान-**डॉ.संजय कुमार** 172-175
10.भारत में गरीबी निवारण में मानवाधिकार की भूमिका-**राजपाल सिंह यादव** 175-177
11.भारत में बाल-अपराध एक समाजिक समस्या:एक अध्ययन-**डॉ.धनंजय शर्मा** 177-180
12.झारखंड में निवासरत संथाल जनजातियों की व्यवसायिक स्थिति,जीवन स्तर एवं उपभोग स्थिति का आर्थिक अध्ययन: (गिरिडीह जिले के विशेष सन्दर्भ में)-**जीतेन्द्र कुमार&डॉ.नमिता शर्मा** 180-181
13.मातृभाषा की भूमिका और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020-**प्रभाकर कुमार** 182-183
14.महाभारत कालीन प्रमुख नगरी द्वारका-एक ऐतिहासिक अध्ययन-**डॉ.रुबी तबस्सुम** 184-185
15. हिमाचल प्रदेश की गद्दी जनजाति:आर्थिक एवं सामाजिक परिदृश्य-**भरत सिंह &विपुल शर्मा** 185-187
16.प्राचीन भारतीय संस्कृति में पर्यावरणीय अवधारणा-**श्वेता तंवर** 188-189
17.कुमाऊँ मण्डल के पिथौरागढ़ जनपद में संचालित विभिन्न पेंशन योजनाओं का निर्धारण तथा लक्षित वर्गों पर प्रभाव का मूल्यांकन-**डॉ.रीन रानी मिश्रा** 189-192

Scanned with CamScanner

जो उनकी हजारों वर्षों की परम्परा को छिन्न-भिन्न करने का कारण बना। सर्वाधिक नुकसान हुआ उनकी सामूहिकता और सामाजिक सुरक्षा को। इस सबके लिए इस क्षेत्र में केवल चार की परियोजनाएँ उत्तरदायी रही है जो हैं - वेदांत रिफाइनरी (उड़ीसा) पोल्लवरम बांध (आंध्र प्रदेश), टाटा आइरन ओर (छत्तीसगढ़) और सुवर्ण रेखा परियोजना (झारखण्ड)।"[8]डा०स्वामीनाथन द्वारा - तैयार किये गये प्रारूप पत्र में बड़े चौकाने वाले मध्य सामने आये हैं- "औद्योगीकरण और विकास से सम्बन्धित विभिन्न परियोजनाओं के कारण आजादी से वर्ष 1990 तक की अवधि में जो आदिवासी विस्थापित हुए उनका पूरी तरह पुनर्वास नहीं हुआ। विस्थापित आदिवासियों की कुल संख्या 85.39 लाख रही जो कुल विस्थापितों का 55.16 प्रतिशत था। विस्थापित आदिवासियों में 64.23 प्रतिशत अब भी पुनर्वास से वंचित हैं। निश्चित रूप से अपनी जड़ व जमीन से उखड़ी यह अपुनर्वासित मानवता झोंपड़-पट्टियों व फुटपाथों के सहारे रहती है या फिर शरणार्थियों अथवा डेराबन्द घुमक्कड़ी जीवन जीने को विवश है। "[9]समय-समय पर उन परियोजनाओं का विरोध भी किया गया है जिससे अधिक से अधिक संख्या में लोगों के विस्थापित होने की संभावना बहुत ज्यादा थी। विस्थापन से संबंधित कुछ उन तथ्यों का जिक्र जिसे 'डेविड पुघ' ने अपने अध्ययन में किया है,जो 'इन्टरनेशनल लीग ऑफ पिपुल्स स्ट्रगल से सम्बन्धित रहे हैं-

"महाराष्ट्र के न्यू मुम्बई में रिलायंस सुरक्षित आर्थिक क्षेत्र (सेज) के कारण 2,50,000 व्यक्तियों के विस्थापन की सम्भावना हुई। कुल 35000 एकड भूमि के अधिग्रहण का तीव्र विरोध हुआ झारखण्ड की एन.टी.पी.सी (नेशनल थर्मल पावर कॉरपोरेशन) परियोजना के कारण कनकपुरा घाटी के 186 गांवों के कुल 3 लाख में से 2 लाख लोगों पर विस्थापन का संकट गहराया 1 नवम्बर, 2006 में 10,000 आदिवासियों ने एकत्रित होकर इसका विरोध किया। जैसे ही एनटीपीसी ने अपना दफ्तर खोला 3000 की भीड़ ने उसे नष्ट कर दिया। एक तरफ परियोजना बनाने की जिद रही है दसरी ओर विरोध अभी भी जारी रहा।

ओड़िसा के जगतसिंहपुर क्षेत्र में पोस्को (कोरिया की कंम्पनी) को राज्य सरकार ने आइरन ओर के प्लांट हेतु 4000 एकड़ जमीन दी। 22,000 लोगों पर विस्थापन की तलवार लटकी जिसका विरोध हुआ और सम्भावित विस्थापितों ने प्रभावी नाकाबन्दी की ताकि इलाके में कोई प्रवेश ना कर सकें।" [10]विस्थापन को लेकर डेविज पुघ का निष्कर्ष निम्न प्रकार है- 1. बाँध, औद्योगिक इकाइयों, खनन और सेज के कारण आगामी एक दशक में करीब एक करोड़ लोगों के विस्थापित होने की सम्भावना है।

2. विस्थापन का प्रतिरोध करने की भारतीय लोगों में अफूल ताकत है

3. विस्थापन के सत्य को लेकर भारत सरकार (केन्द्र व राज्य) तथ्यों के बारे में गलत बयानी करती है और सही अन्दोलन को सशस्त्र बलों द्वारा कुचलने का अन्यायपूर्ण कार्य करती है।"[11]

निष्कर्ष- विकास के नाम पर जब आदिवासियों को उनकी जमीन, जीविका, पुश्तैनी आवास और पूजा स्थलों के साथ-साथ प्रकृति और वन्य जीवों के परिवेश से बेदखल कर दिया जाता है तो क्या इन आदिवासियों के हित एवं विकास का उत्तरदायित्व नहीं बनता है। इनके विकास के लिए योजनाएं सिर्फ कागजों एवं फाइलों तक ही सिमट कर रह जायगी।विकास की बातें तो होती है लेकिन विकास का लाभ विकसित और चालाक वर्ग को ही मिल पाता है। जहाँ कहीं भी इस तरह की परिस्थिति देखने को मिले उन जगहों पर सभी को एक साथ मिलकर विरोध करना चाहिए और अधिक से अधिक लोगों को जागरूक करना चाहिए। यदि विस्थापन ही विकास का एकमात्र विकल्प हो तो ऐसी स्थिति में पुनर्वास केंद्रीय लक्ष्य बन जाता है अत: पुनर्वास नीति प्रावधान के तहत आदिवासियों को पुन: बसाया जाना चाहिए।

****

संदर्भ-:

1.एलेक्स एक्का:झारखण्ड, 'विस्थापन और पुनर्वास',नई दिल्ली, भारतीय सामाजिक संस्थान,पृष्ठ-25
2.एस. बी. महतो: लेख-'पीपुल्स डिसप्लेस्ट बाय द बोकारो स्टील प्लांट', सोशल चेंज Vol.24,No.1-2,मार्च -जून,1994,पृष्ठ-125
3.एलेक्स एक्का :झारखण्ड, विस्थापन और पुनर्वास, नई दिल्ली, भारतीय सामाजिक संस्थान,पृष्ठ-04
4.सोन पहाड़ी, पीटर पॉल एक्का, सत्य भारती प्रकाशन, पृष्ठ-112
5.वही पृष्ठ-112-113 6.वही पृष्ठ-136
7.आदिवासी विमर्श, संपादक:बी.कृष्ण,भीम सिंह, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ-151
8.वही, पृष्ठ-148-149 9.वही, पृष्ठ-150
10.वही, पृष्ठ-150 11.वही, पृष्ठ

बंजारा बोली : भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता

सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण
सहा. प्राध्यापक,हिंदी विभाग
राजर्षि शाहू महाविद्यालय (स्वायत्त), लातूर

प्रस्तावना :- भाषा का इतिहास उतनाही पुराना है जितना कि पुराना मनुष्य का इतिहास। जीवन और जगत् से जुड़ी भाषा मानव समुदाय की अमूल्य संपदा है। हमारी चिंतन प्रक्रिया, भावबोध और विचार अभिव्यक्ती का साधन होती है भाषा। यदि सामाजिक जीवन में भाषाएँ नहीं होती तो पारस्परिक विचार विनिमय सर्वथा अवरुद्ध हो जाता। भाषा मात्र प्रयोजनपरक नहीं होती बल्कि वह प्रयुक्तिपरक अर्थात् यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था भी होती है। इसी प्रयोजनपरक और प्रयुक्तिपरक प्रकार्य की समझ में भाषा विज्ञान सहायक की भूमिका अदा करता है। सामाजिक अवधारणा में भाषा का प्रयोग अपने प्रयोक्ता को सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाता है। उसकी यह सामाजिक प्रतिष्ठा मात्र अभिव्यक्ति से नहीं बल्कि अभिव्यक्ति में रहे उसके वाक् व्यवहार की विशिष्टता, यादृच्छिक अभिलक्षणता से स्पष्ट होती है। एक व्यक्ति भाषा के सामान्य प्रयोग को समझता है किंतु उसे विशिष्ट प्रयोग को समझने के लिए भाषा विज्ञान के ऐनक से समझने की आवश्यकता है।

बीज शब्द:- बंजारा, भाषाविज्ञान, यादृच्छिकता, राजस्थान, भारतीय आर्य भाषा, लोकसाहित्य, प्रयोजनपरकता, अध्ययन, भाषिक सामर्थ्य.

मुख्य भाग :-प्रारंभ से ही मनुष्य अधिक से अधिक सुखी बनने की होड़ में वैज्ञानिक अविष्कारों के माध्यम से नये-नये विकल्प तैयार कर प्रगति कर रहा है। उसकी यह निरंतर परिवर्तन होते रहने की विकासवादी भावना ने भाषा को भी प्रभावित किया है। मानव-जीवन की सांस्कृतिक सभ्यता भी भाषा को प्रभावित करती रही है। शायद इसीलिए 'भाषा को बहता नीर' कहा जाता है। उसकी इस निरंतर बहती रहने की प्रक्रिया में ही भाषा की जीवंतता निर्भर होती है। भारतीय आर्य भाषाओं में संस्कृत का परिचालन अगर आज की भाषाओं तक न हुआ होता तो शायद संस्कृत अवरूद्ध ही बनकर रह जाती। भाषा की यही परिवर्तनशीलता जिज्ञासुओं को भाषा-अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करती रहती है। भाषा का लघुत्तम रूप व्यक्ति की बोली है। वास्तविक रूप में भाषा का प्राकृतिक जीवन उसकी बोलियों में ही सन्निहित रहता है। बोली किसी भी भाषा की आरंभिक अवस्था की परिचायक होती है। इसी विषय के संबंध में एफ. मैक्समूलर अपनी पुस्तक 'भाषा विज्ञान' (The Science of Language) में लिखते हैं- "आदि युग में भाषा का अस्तित्व बोलियों के रूप में ही था। किंतु इतिहास में इस बात का भी पता चलता है कि जिस देश में हम केवल एक भाषा के प्रचलित होने की कल्पना करते थे वहाँ अनेक भाषाएँ प्रचलित थी।"[1] अर्थात् आज जिस व्याकरणसम्मत और मानक संरचनागत व्यवस्था से युक्त परिनिष्ठित साहित्य के अगाध भंडार को देखते हैं तो उसके नींव में बोली के अनन्यसाधारण महत्त्व को कम नहीं आँका जाना चाहिए। आज अगर केवल बोली समझकर हिंदी भाषा से अवधी, ब्रज, राजस्थानी बोली में लिखित साहित्य महत्त्वहीन समझने लगे तो हिंदी साहित्य का अतीत ही नहीं रहेगा। एफ. मैक्समूलर ही बोली के अमित साधन-स्रोत के संदर्भ में लिखते हैं- "जब भाषा रूढ़िबद्ध हो जाती है तब बोलियाँ उसे नये अर्थवाले शब्द प्रदान करती है। जब समाज की प्रगति के साथ-साथ नये विचारों के द्योतन के लिए शब्दों की आवश्यकता होती है तब बोलियाँ अपने भांडार के अतिरिक्त शब्दों से उनकी सहायता करती है।"[2]

हिंदी साहित्य के आदिकाल में जो वीर रसयुक्त रासो काव्य लिखा गया वह राजस्थानी बोली भाषा से जुड़ा था। भारतीय आर्यभाषा परिवार में हिंदी की बोलियों में राजस्थानी का उल्लेख होता है। इसी राजस्थानी की उपबोली के रूप में बंजारा बोली का समावेश होता है। क्योंकि बंजारे अपने आपको राजस्थान के मूल निवासी मानते हैं। उनके संस्कार, तीज-त्योहार, वेशभूषा, लोकसाहित्य एवं बोलीभाषा से यह ज्ञात होता है कि वे राजस्थानी बोलीभाषा से संबंध रखते हैं। जिसका उल्लेख नरोत्तम स्वामी ने भी किया है। जिसे डॉ. गोवर्धन शर्मा अपने लेख 'राजस्थानी भाषा : उद्भव एवं विकास' में उल्लेखित करते हैं- "बंजारी यह राजस्थान से बाहर रहनेवाले बंजारों की भाषा है। स्थानानुसार इसके कई भेद हैं। ये बंजारे राजस्थान के मूल निवासी थे और

Scanned with CamScanner

व्यापार के सिलसिले में माल लादकर दूर-दूर तक पहुँचते थे। कालांतर में वे इधर-उधर बस गए। उनकी भाषा का मूल ढाँचा राजस्थानी से प्रभावित रहा है यद्यपि स्थानीय प्रभाव से उसमें थोड़ा बहुत परिवर्तन भी हुआ।"[3] बंजारा बोली को लमाण, लमाणी, लभानी या बंजारी भी कहा जाता है। राजस्थानी भाषा का पहली बार सर्वेक्षण करनेवाले जॉर्ज ग्रियर्सन भी बंजारी को राजस्थानी से जोडते हैं। वे 'भारत का भाषा सर्वेक्षण' (खंड 1, भाग 1) में बंजारा बोली के संबंध में लिखते हैं- "'लभानी' या 'बंजारी' बंजारा लोगों की बोली है। बंजारा भ्रमणशील जाति है और संपूर्ण पश्चिमी तथा दक्षिणी भारत इनके भ्रमण का क्षेत्र है। ....सर्वत्र इनकी भाषा मिश्रित भाषा के रूप में है, किंतु आदि से अंत तक इसका आधार राजस्थानी का कोई न कोई पश्चिमी रूप है, तथा इनके अन्य तत्वों में उन स्थानों की बोलियों से गृहित अंश भी सन्निहित हैं, जहाँ इस जाति के लोग निवास करते हैं।"[4] इससे यह पता चलता है कि बंजारा बोली हिंदी की उपबोलियों में से एक है। इसलिए बंजारा बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन करना हो तो उसे हिंदी की उपबोली के रूप में करना होगा। एफ. मैक्समूलर भाषा-विज्ञान (The Science of Language) में लिखते हैं- "अंग्रेजी का जन्म केवल वेसेक्स (Wessex) की एंग्लो सैक्शन भाषा से नहीं हुआ था किंतु उसकी उत्पत्ति ग्रेट ब्रिटेन के प्रत्येक भाग में प्रचलित बोलियों से हुई थी।... अंग्रेजी भाषा के सूक्ष्म एवं आलोचनात्मक अध्ययन के लिए इसकी कतिपय स्थानीय बोलियों का अध्ययन अत्याधिक महत्त्वपूर्ण है।"[5] मैक्समूलर के इस बात को समझें तो बंजारा बोली का अध्ययन न मात्र बंजारा बोली को अध्ययन होगा बल्कि राजस्थानी एवं हिंदी भाषा के सूक्ष्म अध्ययन के लिए बंजारा बोली के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है। बाजारवाद की चपेट में आ रही बंजारा बोली का संवर्धन करना यह समय की माँग है। बंजारा बोली यह बंजारा समाज परंपरा की विरासत है। बंजारा बोली का भाषिक सामर्थ्य, ऐतिहासिक विश्लेषण आदि का वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिकता के आधार पर अध्ययन करने के लिए इसकी भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है। बंजारा बोली का व्याकरण, उसका सीमा निर्धारण, कोश संकलन, तुलनात्मक एवं ऐतिहासिक निष्कर्षों की खोज करने के लिए बंजारा बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन ही आवश्यकता है। आज भाषा विज्ञान को भौतिक विज्ञान एवं शरीर विज्ञान से भी जोड़ा जा रहा है। ऐसे समय में बंजारा बोली की ध्वनी व्यवस्था में उच्चारण, स्वर, व्यंजन आदि का आकलन होने के लिए बंजारा बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है। बंजारा बोली का पूरे देश में भौगोलिक दूरी होने के बावजूद भी बोधगम्यता के कारण बोली का रूप धारण करती है।

बंजारा बोली का महत्त्व इस बात पर भी निर्भर करता है कि सामाजिक व्यवहार और शिक्षा-साहित्य में उसका क्या महत्त्व है। आज बंजारा बोली में कहानियाँ, कविताएँ लिखी जा रही हैं। वीरा राठोड की 'सेन साई वेस' जैसे कविता संग्रह को 'साहित्य अकादमी' का पुरस्कार भी मिला है। शिक्षा की दृष्टि से बंजारा बोली के महत्त्व को समझा जाये तो विद्यार्थी जितना गति से और उचित रूप से मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करता है उतनी उचित गति से वह किसी अन्य भाषा में नहीं कर सकता। इस बात को ध्यान में रखते हुए महाराष्ट्र सरकार बंजारा बहुल टांडों में बंजारा बोली में अध्यापन करने के लिए प्रेरित करती रही है। पाठ्यक्रमों में भी बंजारा बोली में काव्यपाठ रखा जा रहा हैं। ऐसे समय अगर बंजारा बोली में साहित्य सृजन हो रहा हो तो उसके शब्द, रूप, वाक्य, अर्थ, वर्तनी आदि के आधार पर भाषावैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन करने की आवश्यकता है ताकि वह संप्रेषण के विविध स्तरों पर स्वायत्त बने, निजी शब्दभंडार में वृद्धि हो और व्यवहार बहुल बने। क्योंकि बोली के विकास से भाषा और उसका साहित्य समृद्ध होता है।

भारतीय आर्य भाषाओं में बंजारा बोली का स्थान, विभिन्न भाषाओं का बंजारा बोली पर पड़ रहा प्रभाव, ध्वनि परिवर्तन के कारण, उसकी कारक व्यवस्था, उसके प्रत्यय, उपसर्ग, वाक्यभेद, वाक्य परिवर्तन के कारण, उसके शब्दसमूह आदि का सूक्ष्म अध्ययन करने के लिए बंजारा बोली के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है। बंजारा बोली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन द्वारा बंजारों के भ्रमणशील प्रवृत्ति के कारण उनके शब्दों में हुए परिवर्तनों को समझा जा सकता है। आज पूरे देश में लगभग आठ करोड़ से भी अधिक बंजारों की संख्या है। हर प्रदेश में रहनेवाले बंजारों की बोली लगभग उसी रूप में बोली जाती है। किंतु स्थान विशेष के प्रभाव के कारण कहीं-कहीं उनके उच्चारणगत व्यवस्था और आगत नये प्रादेशिक शब्द अनायास समाहित हो जाते हैं। उन शब्दों का सूक्ष्म अध्ययन करने और उच्चारणगत भिन्नता को समझने के लिए बंजारा बोली के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जाय तो किसी भी भाषा का विकास बोली से ही होता है। जिन बोलियों के व्याकरण का मानकीकरण हो जाता है और वह बोली सृजनात्मक दृष्टि से भाषिक अभिव्यक्ति में सक्षम हो जाती है तब वह लिखित रूप धारण कर लेती है। व्याकरण भाषा विज्ञान के लिए प्रकाश-स्तंभ का कार्य करता है। बोली के शुद्ध उच्चारण, शुद्ध प्रयोग एवं शुद्धलेखन के दृष्टि से बंजारा बोली का भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन करने की आवश्यकता है। क्योंकि किसी भी बोली का एक मानक भाषा-विज्ञान निश्चित हो जाता है तो उसका साहित्य भी समृद्ध होता रहता है।

****

संदर्भ ग्रंथ सूची -

1) भाषा विज्ञान (The Science of Language) - एम. मैक्समूलर, अनुवाद. उदयनारायण तिवारी, मोतीलाल बनारसीदास, बंगला रोड, जवाहरनगर, दिल्ली,-7, प्रथम संस्करण जनवरी 1970, पृ. 46.
2)वही, पृ. 53
3) राजस्थानी भाषा और उसकी बोलियाँ - संपा. डॉ. देव कोठारी, साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर, प्रथम संस्करण 1991, पृ. 14.
4) भारत का भाषा सर्वेक्षण (खंड 1, भाग 1) - सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन, अनु. उदयनारायण तिवारी, प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, द्वितीय संस्करण, पृ. 337-338.
5) भाषा- विज्ञान (The Science of Language) - एफ. मैक्समूलर, अनु. उदयनारायण तिवारी, मोतीलाल बनारसीदास, बंगला रोड, जवाहरनगर, दिल्ली -7, प्रथम सं. जनवरी 1970, पृ. 57.

Scanned with CamScanner